कुरआन व हदीस की अदालत में

फजाइले आमाल और बहिश्ती जेवर

एक जायजा

फरमाने इलाही : ऐ ईमान वालों! अल्लाह की और उसके रसूल की इताअत करो (कहना मानो) और उन बादशाहों की भी जो तुम में से हो। फिर अगर किसी मामले में तुम्हारे बीच झगड़ा हो जाये, तो अगर तुम अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हो तो उसको अल्लाह और उसके रसूल की तरफ लौटा दो, यही बेहतर और अंजाम के लिहाज से अच्छा है। (सूरा निसा, पारा 5, आयत 59)

तालीफ:

एजाज खान, सीकर

Mobile : 09829319313

कुरआन व हदीस की अदालत में

फजाइले आमाल और बहिश्ती जेवर

एक जायजा

फरमाने इलाही : ऐ ईमान वालों! अल्लाह की और उसके रसूल की इताअत करो (कहना मानो) और उन बादशाहों की भी जो तुम में से हो। फिर अगर किसी मामले में तुम्हारे बीच झगड़ा हो जाये, तो अगर तुम अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हो तो उसको अल्लाह और उसके रसूल की तरफ लौटा दो, यही बेहतर और अंजाम के लिहाज से, अच्छा है। (सूरा निसा, पारा 5, आयत 59)

तालीफ:

एजाज खान, सीकर

Mobile : 09829319313

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुरआन व हदीस की अदालत में

फजाइले आमाल और बहिश्ती जेवर

एक जायजा

कीमत : 25/- रूपये मात्र

तालीफ : ऐजाज खान, M: 09829319313

मिलने का पता:
मस्जिद अल हय्युल कय्युम, बाई पास खण्डेला,
सीकर (राज.) इण्डिया
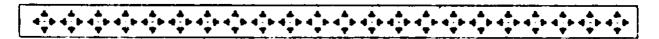
फहरिस्त:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

إِنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِيْنُهُ، مَنْ يَهْدِهِ اللهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ. أَمَّا بَعْدُ: فَإِنَّ خَيْرَ الْحَدِيْثِ كِتَابُ اللهِ وَخَيْرَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ ﷺ، وَشَرَّ الْأُمُوْرِ مُحْدَثَاتُهَا، وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ﴾ - ﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا﴾ - ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝ يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا﴾

तर्जुमा : बिलाशुबा सब तारीफें अल्लाह के लिए हैं, हम उसकी तारीफ करते हैं, उससे मदद मांगते हैं जिसे अल्लाह राह दिखाये, उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे अपने दर से धुतकार दे, उसके लिए कोई रहबर नहीं हो सकता और मैं गवाही देता हूँ कि मअबूदे बरहक सिर्फ अल्लाह तआला है, वोह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दे और उसके रसूल हैं। हम्दो सलात के बाद यकीनन तमाम बातों से बेहतर बात अल्लाह तआला

की किताब है और तमाम तरीकों से बेहतर तरीका मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का है और तमाम कामों से बदतरीन काम वोह है जो (अल्लाह के दीन में) अपनी तरफ से निकाले जायें। और हर बिदअत गुमराही है।'' (मुस्लिम, हदीस नं. 867)

''ऐ ईमान वालों! अल्लाह से डरो। जैसा के उससे डरने का हक है और तुम्हें मौत न आये मगर, इस हाल में कि तुम मुसलमान हो।'' (सूरा ए आले इमरान, पारा 4, आयत नं. 102)

''ऐ लोगों! अपने रब से डरो, जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और (फिर) उस जान से उसकी बीवी को बनाया और (फिर) उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें पैदा कीं और उन्हें (जमीन पर) फैलाया। अल्लाह से डरते रहो जिसके जरीए (जिसके नाम पर) तुम एक दूसरे से सवाल करते हो और रिश्तों (को कता करने) से डरों (बचो)। बेशक अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है।'' (सूरा ए निसाअ पारा 4 आयत नं. 1)

''ऐ ईमान वालों! अल्लाह से डरो और ऐसी बात कहो जो मोहकम (सीधी और सच्ची) हो। अल्लाह तुम्हारे अमाल की इस्लाह और तुम्हारे गुनाहों को मआफ फरमायेगा और जिस शख्स ने अल्लाह और उसके रसूल की इताअत की तो उसने बड़ी कामयाबी हासिल की।'' (सूरा अहजाब पारा 22, आयत नं. 70, 71)

सिर्फ अल्लाह तआला और मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्ल. का कहना मानना जरूरी

- फरमाने इलाही : सौ कसम है तेरे परवरदीगार की। यह मौमिन नहीं हो सकते, जब तक कि तमाम आपस में इख्तलाफ (झगड़ों) में आपको हाकिम न मान ले। फिर जो फैसला आप (सल्ल) उनमें कर दे। उनसे अपने दिल में किसी तरह की तंगी और ना खुशी न पाये और फरमानबरदारी के साथ कबूल कर लें। (सूरा निसाअ, पारा 5, आयत 65)
- फरमाने इलाही : और (देखो) किसी मौमिन आदमी और औरत को अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल.) के फैसले के बाद अपने किसी अम्र (मरजी) का कोई इख्तेयार बाकी नहीं रहता। (याद रखो) अल्लाह तआला और उसके रसूल (सल्ल.) की जो भी नाफरमानी करेगा (बात नहीं मानेगा) वोह खुली गुमराही में पड़ेगा।
- फरमाने इलाही : ऐ ईमान वालों! कहना मानो
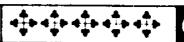
अल्लाह तआला का और कहना मानो रसूल (सल्ल.) का और तुम में इख्तेयार वालों का (यानी बादशाह अमीर) फिर अगर किसी चीज में इख्तलाफ करो (यानी कोई मसअला समझ में नहीं आए) तो उसे लौटा दो, अल्लाह तआला (यानी कुरआन) की तरफ और रसूल (सल्ल.) (हदीस) की तरफ। अगर तुम्हें अल्लाह तआला पर और कयामत के दिन पर ईमान है। यह बहुत अच्छा है और अन्जाम के ऐतबार से बहुत बेहतर है। (सूरा निसाअ, पारा 5, आयत नं. 59)

- फरमाने इलाही : ऐ लोगों! जो ईमान लाये हों अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो (और इताअत से मुंह मोड़कर) अपने काम बर्बाद ना करो। (सूरा मुहम्मद, पारा 26, आयत नं. 33)

- फरमाने इलाही : जो कुछ तुम्हें रसूल दे वोह ले लो और जिस चीज से तुम्हें रोक दे, उससे रूक जाओ और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सख्त अजाब देने वाला है। (सूरा हश्र, पारा 28, आयत नं. 7)
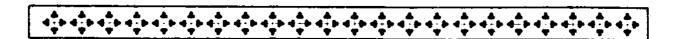
सिर्फ कुरआन व सुन्नत पर मजबूती से अमल करने वाले लोग गुमराहियों से महफूज रहेंगे।

फरमाने रसूल सल्ल. : हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. से रिवायत है कि रसूल अल्लाह सल्ल. ने आखिरी हज के मौके पर खुतबा देते हुए इरशाद फरमाया ''शैतान इस बात से मायूस हो चुका है कि इस सर जमीन में कभी उसकी बन्दगी की जायेगी। लिहाजा अब वोह इसी बात पर मुतमईन है कि (शिर्क के अलावा) वोह काम जिन्हें तुम मामूली समझते हो, उनमें उसकी पैरवी की जाये (शैतान से हर वक्त) खबरदार रहो। (सुनो) मैं तुम्हारे बीच वोह चीजें छोड़े जा रहा हूँ जिसे मजबूती से थामे रखोगे तो कभी गुमराह नहीं होंगे और वो है अल्लाह की किताब और उसके नबी (सल्ल.) की सुन्नत।

इस हदीस को हाकिम ने रिवायत किया है। (हसन)

फरमाने इलाही: सुनो! जो लोग हुकम रसूल (सल्ल.) की मुखालफत करते हैं, उन्हें डरते रहना चाहिए
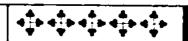
कि कहीं उन पर कोई जबरदस्त आफत न आ पडे या इन्हें दर्दनाक अजाब (न) पहुंचे। (सूर नूर, पारा 18, आयत नं. 63)

फरमाने रसूल सल्ल. : मैं तुम्हारे पास दो चीजें छोड़ चला हूँ, उनको जब तक पकड़े रखोगे, गुमराह ना होने पाओगे। एक अल्लाह की किताब (कुरआन मजीद) दूसरी उसके रसूल (सल्ल.) की सुन्नत।

(हदीस-सही हदीस मोत्ता इमाम मालिक उर्दू तर्जुमा सफा नं. 628)

''अल्लाह हुम्मा सल्ले अला मुहम्मद्दीन अब्दिका व रसूलिका व अलमौमिनिना व अलमौमिनाति व अ-लल मुस्लिमिना वल मुस्लिमाति।''

मुसलमान भाईयों! जिस मोजूअ पर मैं अल्लाह की तौफिक से यह छोटी-सी किताब लिखने जा रहा हूँ, यह इस वक्त का सबसे खास मोजू है और वोह मोजू फजाइल आमाल कुरआन व हदीस की अदालत में है। फजाइल आमाल लिखने वाले और हमारे तबलिगी भाई जो इसको पढ़ते और सुबह व शाम इसका दरस (सबक) देते रहते हैं, इस किताब में कितने भयानक और खतरनाक अकाईद और शिर्किया बातें मौजूद हैं और इसके अलावा बहुत सारी चीजें मनघड़त किस्से, कहानियाँ, झूटी हदीसें और अफसोस इस बात का है कि एक अजीम इन्सान आलिम फाजिल जिसको तबलिगी जमाअत ही नहीं बल्कि दुनिया-ए-देव बन्दियत में इल्म का मिनारा कहा जाता है, हजरत मौलाना मुहम्मद जकरिया शैखूल हदीस के नाम से याद किये जाते हैं। उन्होंने अपनी किताब फजाइल आमाल में यह तमाम सब बातें लिखी और कही हैं। इन तमाम सब बातों का जिक्र से मेरा मकसद सिर्फ और सिर्फ ये है कि हमारे मुसलमान भाई अन्धेरों से निकलकर कुरआन हदीस की रोशनी की तरफ आए और कुरआन व सुन्नत को अपना मनहज-ए-अमल बना ले। अल्लाह और उसके रसूल सल्ल. के फरमान से ही यह मुसलमान सुधर सकते हैं। इस दुनिया की इस्लाह हो सकती है।

फरमाने इलाही : (मुहम्मद सल्ल.) कह दीजिए कि अल्लाह तआला और उसके रसूल की इताअत करो। अगर यह मुंह फेर ले तो बेशक अल्लाह तआला काफिरों को दोस्त नहीं रखता। (सूरा आले इमरान, पारा 3, आयत नं. 32)

इस किताब को लिखने से मेरा मकसद किसी जमाअत, किसी फिरके, किसी गिरोह को बुरा कहना नहीं है, बल्कि मेरा मकसद इस्लाह है।

फरमाने इलाही : मेरा इरादा तो अपनी ताकत भर इस्लाह करने का ही है। मेरी तौफिक अल्लाह ही की मदद से है, उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की तरफ से पलटता हूँ। (सूरा हूद, पारा 12, आयत नं. 88)

और यह हम और आप सब अच्छी तरह जानते हैं कि ईमान के अन्दर इस्लाम के अन्दर कुछ बातें ऐसी है जो दो टोक है, दो लफ्जों में है। अगर कोई इन्सान इन दो लफ्जों के ऊपर या वो जो दो टूक ईमान और अकीदेह के अलफाज है, उसका इनकार कर दे, उन पर ईमान न लाए तो नेकियाँ, नमाज, रोजे, जकात, हज, सदके, खैरात, मेहनतें कितनी भी हो, वो दो लफ्जों के मजमुए का अगर वोह इनकार कर दे, तमाम चीजों

पर ईमान रखता है, लेकिन किसी एक या दो अकीदेह का इनकार कर दे तो उसके नमाज, उसके जकात, हज, रोजे सारे के सारे बर्बाद हैं। अल्लाह तआला के यहाँ इनकी कोई अहमीयत नहीं।

आप इसको एक मिसाल से समझें- एक बहुत बड़ा हाल या कमरा है, खूब सजा-सजाया। उसमें ए.सी., फ्रिज, ट्यूब लाईट, बल्ब लगी हुई है। सब अपना अपना काम कर रही है। आपने इनमें से किसी के वायर को हाथ नहीं लगाया। आपने मैन स्विच से सिर्फ एक तार निकाल दिया। आप बताएं कि अब यह सजा सजाया हाल, यह ए.सी., ट्यूब लाईट, बल्ब कोई काम करेगी? हरगिज नहीं! कोई कहने वाला कह सकता है कि भाई साहब उसने सिर्फ मैन स्विच से एक वायर छुआ है, एक तार निकालने से इतनी खराबी। जी हाँ! एक तार से इतमी ही खराबी आती है। ठीक यही मिसाल अकीदे की है, अकीदे की थोड़ी सी खराबी सारे नेक कामों को पलक झपकते ही बरबाद कर देती है।

अकीदाह क्या है?

सही अकीदाह दीन इस्लाम की बुनियाद है और
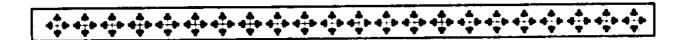
मिल्लत इस्लामिया की असास इसी पर कायम है। अकीदे की यह बातें कुरआन व हदीस के दलाइल से साबित हैं।

फरमाने इलाही: ऐ ईमान वालों! ईमान लाओ, अल्लाह पर और उसके रसूल पर और इस किताब (कुरआन) पर जो अल्लाह ने अपने रसूल (सल्ल.) पर उतारी है और उस किताब पर जो इससे पहले नाजिल हो चुका है। जिसने अल्लाह और उसके फरिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों और रोजे आखिरत से कुफर किया (इनकार किया), वोह गुमराही में भटक कर बहुत दूर निकल गया। (सूरा निसाअ, पारा 5, आयत नं. 136)

कुरआन हदीस का अकीदाह, मुसलमान का अकीदाह, दीन इस्लाम मुकम्मल (पूरा) है।

अल्लाह तआला का इस उम्मत पर सबसे बड़ा अहसान यह है कि उसने दीन मुकम्मल कर दिया। अब किसी दूसरे दीन या नबी और ईमाम की जरूरत नहीं। इसीलिए आप सल्ल. आखरी नबी और आखरी इमाम हैं। आप सल्ल. आदम अलैहिस्सलाम से लेकर ईसा अलैहिस्सलाम तक सब पैगम्बरों के ईमाम हैं।

1. फरमाने इलाही : आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया है। तुम पर अपनी नैमत पूरी कर दी है और इस्लाम को तुम्हारे लिए बतौर दीन पसन्द किया है। (सूरा माईदाह, पारा6, आयत 3)

2. फरमाने इलाही : (लोगों) तुम्हारे मर्दो में से किसी के बाप मुहम्मद (सल्ल.) नहीं, लेकिन आप अल्लाह तआला के रसूल हैं और तमाम नबीयों के खत्म करने वाले (आखरी नबी) और अल्लाह तआला हर चीज को (बखुबी) जानने वाला है। (सूरा अहजाब, पारा 22, आयत नं. 40)

3. जो शख्स इस्लाम के सिवा और दीन तलाश करे, उसका दीन कबूल नहीं किया जायेगा और वोह आखरत में नुकसान पाने वालों में से होगा। (सूरा आले इमरान, पारा 3, आयत नं. 85)

तारीख फजाइल आमाल

फजाइल आमाल जकरिया साहब ने किन दिनों में लिखी

सफर 1357 हिजरी में एक मर्ज (बीमारी) की

वजह से चन्द रोज के लिए दिमागी काम से रोक दिया गया तो मुझे ख्याल हुआ कि इन खाली अय्याम (दिनों) को इस बा-बरकत मशगले में गुजार दूं कि अगर यह अवराक पसन्द खातिर न हुये तब भी मेरे यह खाली अवकात (वक्त) तो बहतरीन और बा-बरकत मशगले में गुजर ही जायेंगे। (हिन्दी तमहीद सफा 17, हिकायाते सहाबा रजि.)

मतलब यह है कि इन बुजुर्ग साहब को पसन्द न आये, तब भी मेरा खाली वक्त अच्छे काम में गुजर ही जायेगा।

फजाइल आमाल का अकीदाह

दीन इस्लाम ना मुकम्मल (पूरा नहीं)

फरमाने इलाही : और उससे बढ़कर जालिम कौन होगा, जो अल्लाह पर झूट बांधे। (सूरा हूद, पारा 12, आयत नं. 18)

मालूम हुआ कि हम रसूलों से आजाद होकर अल्लाह तआला के अहकामात नहीं जान सकते। जो इन्सान अल्लाह तआला से बराहे रास्त (सीधा) सुनने का दावा करता है, वोह अल्लाह पर झूट बांधता है, जैसा कि आपने ऊपर की आयत पढ़ी है।

1. मगर फजाइले आमाल के मानने वाले इस आदमी को अल्लाह का वली (दोस्त) जानते हैं जो अहादीस रसूल (सल्ल.) सुनने से इनकार करे और डायरेक्ट (सीधा) अल्लाह तआला से सुनने का दावा करे।

2. आसमान से परचा गिरा

हजरत जूवाननून मिसरी फरमाते हैं कि मैंने एक नौजवान को काबा शरीफ के पास देखा कि दमा-दम सज्दे कर रहा है। मैंने पूछा कि बड़ी कसरत से नमाजें पढ़ रहे हो। वोह कहने लगा, वापसी वतन की इजाजत मांग रहा हूँ। इतने में मैंने देखा कि एक कागज का परचा गिरा। उसमें लिखा हुवा था कि यह अल्लाह जल्ल शानहु जो बड़ी इज्जत वाला, बड़ी मगफिरत वाला है, की तरफ से अपने सच्चे शुकर गुजार बन्दे की तरफ है कि तू वापिस चला जा। इस तरह की तेरे अगले-पिछले सब गुनाह बख्श दिये गये। (फजाइल हज्ज, किस्सा 15, सफा 232)

1. वाक्या मुलाहेजा फरमायें:- अबदाल में से एक शख्स ने दरयाफ्त (मालूम) किया कि तुमने अपने से ज्यादा मरतबा वाला भी कोई वली देखा। फरमाने लगे, "हाँ देखा है।" मैं एक मर्तबा मदीना

तय्यबा में मस्जिदे नबवी में हाजिर था। मैंने इमाम अब्दुर्रज्जाक मुहद्दीस को देखा कि वोह अहादीस सुना रहे हैं और मजमा उनके पास अहादीस सुन रहा है। मस्जिद के एक कोने में एक जवान, घुटनों पर सर रखकर अलग बैठा है। मैंने उस जवान से कहा, "तुम देखते नहीं कि मजमा हुजूर अकदस सल्ल. की अहादीस सुन रहा है। तुम उनके साथ शरीक नहीं होते। उस जवान ने ना तो सर उठाया और ना ही मेरी तरफ इत्तिफात किया और कहने लगा उस जगह वोह लोग हैं जो अब्दुल रज्जाक (अल्लाह तआला) के अब्द (बन्दे) से हदीस सुनते हैं और यहाँ वो है जो खुद रज्जाक (अल्लाह तआला) से सुनते हैं न कि उसके अब्द (बन्दे) से। हजरत खिजिर अलैहिस्सलाम ने फरमाया, "तुम्हारा कहना हक है तो बताओ कि मैं कौन हूँ?" उसने सर उठाया और कहने लगा कि अगर फरासत सही है तो आप खिजिर अलैहिस्सलाम हैं। खिजिर अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि इससे मैंने जाना कि अल्लाह के बाज (कुछ) वली ऐसे भी हैं, जिनके ऊलू मरतबे की वजह से मैं उनको नहीं पहचानता।

हक तआला उनसे राजी हो और हम को भी उनसे नफा पहुंचाये। आमीन! (फजाइल हज्ज, किस्सा 9, सफा 164)

ऐसा अकीदाह रखने वालों के लिए कुरआन व हदीस का फैसला

1. फरमाने इलाही : और उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूट बांधे। (सूरा-ए- हूद, पारा 12, आयत 18)

2. फरमाने इलाही : सो उस शख्स से ज्यादा कौन जालिम होगा, जो अल्लाह पर झूट बांधे या उसकी आयतों को झूटा बताए। यकीनन ऐसे मुजरिमों को असलन कामयाबी नहीं होगी। (सूरा युनूस, पारा 11, आयत नं. 17)

कुरआन हदीस का अकीदाह

अल्लाह तआला के सिवा कोई भी गैब नहीं जानता

गैब के लुगवी मानी हैं "अन देखा"। इसमें वोह तमाम चीजें दाखिल हैं। जिसका इदराक इस दुनिया में
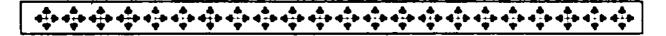
न अकल से हो सकता है, न हवास से। जैसे अल्लाह तआला की जात, फरिश्ते, मौत के बाद की जिन्दगी वगैरह। गैब पर ईमान से मुराद है अल्लाह और उसके रसूल सल्ल. की बताई हुई उन तमामं बातों पर यकीन रखना है जो अकल व हवास से दूर है। यानी अल्लाह पर ईमान लाना, फरिश्तों को मानना, कबर का अजाब, जन्नत, कल क्या होगा, बारिश कब और कितनी होगी, आदमी कहाँ मरेगा, माँ के पेट में क्या है, वगैराह। इन सब को गैब की बाते कहते हैं। यह सब अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता।

फरमाने इलाही : और अल्लाह तआला ही के पास गैब की कुंजिया है, उनको कोई नहीं जानता। सिवाय अल्लाह के और वोह सारी चीजों को जानता है जो कुछ खुशकी (जमीन) में है और जो कुछ समन्दरों में है और कोई पत्ता नहीं गिरता मगर वोह उसको भी जानता है और कोई दाना जमीन के तारीक (अन्धेरे) हिस्सों में नहीं पड़ता और न कोई तर (गिली) और न कोई खुशक (सूखी) चीज गिरती है। मगर यह सब किताब मुबीन (लोहे महफूज) में है। (सूरा अनआम, पारा 7, आयत नं. 59)

वोह गैब को जानने वाला है और अपने गैब पर

किसी को मुतला नहीं करता। (किसी को भी नहीं बताता)। सिवाय उस पैगम्बर के जिसे वोह पसन्द कर ले। लेकिन उसके भी आगे-पीछे पहरेदार मुकर्रर कर देता है। (सूरा जिन्न, पारा 29, आयत नं. 26, 27)

फजाइल आमाल का अकीदा

बुजूर्ग भी गैब जानते हैं

1. अबुल हसन मालकी कहते हैं कि मैं खैर नूर बाफ के साथ कई साल रहा। उन्होंने अपने इन्तकाल से आठ योम (दिन) पहले कहा कि मैं जुमेरात की शाम को मगरीब के वक्त मरूंगा और जुमे की नमाज के बाद दफन किया जाऊँगा, भूल न जाना। लेकिन मैं बिलकुल भूल गया। जुमे की सुबह एक शख्स ने मुझे इन्तकाल की खबर सुनाई। मैं फौरन गया कि जनाजे में शिरकत करूं। रास्ते में लोग मिले जो उनके घर से वापिस आ रहे थे और यह कह रहे कि जुमा के बाद दफन होंगे। मगर उनके घर पहुँच गया। मैंने वहाँ जाकर उनके इन्तेकाल की कैफियत पूछी तो मुझसे एक शख्स ने जो इन्तकाल के वक्त उनके
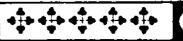
पास मौजूद था, बताया कि रात मगरीब की नमाज के करीब उनको गशी-सी हुई। उसके बाद जरा इफाका सा हुआ तो घर के एक कोने की तरफ मुंह करके कहने लगे कि थोड़ी देर ठहर जाओ, तुम्हें भी एक काम का हुकूम है और मुझे भी एक का काम का हुकम है। (फजाइल सद्कात, सफा 485)

आप हजरात ने इस किस्से को पढ़ा। इन बुजुर्ग को अपनी मौत का वक्त आठ रोज पहले ही मालूम चल गया कि मैं जुमेरात को मगरिब के वकत मरूंगा। यह किस्सा कुरआन के खिलाफ है। क्योंकि गैब का इल्म सिर्फ अल्लाह तआला को ही है।

फरमाने इलाही : बेशक अल्लाह तआला ही के पास कयामत का इल्म है, वही बारिश नाजिल फरमाता है और माँ के पेट में जो है उसे जानता है। कोई (भी) नहीं जानता कि कल क्या करेगा, न किसी को यह मालूम है कि किस जमीन में मरेगा। अल्लाह तआला ही पूरे इल्म वाला और सही खबरों वाला है। (सूरा लुकमान, पारा 21, आयत 34)

कुरतबी का वाक्या

शेख अबू यजीद कुरबती फरमाते हैं कि मैंने यह

सुना (किससे सुना मालूम नहीं) कि जो शख्स सत्तर हजार मरतबा ''ला इलाहा इल्ललाहु'' पढ़े, उसको दोजख की आग से निजात मिले। मैंने यह खबर सुनकर एक निसाब, यानी सत्तर हजार की तादाद अपनी बीवी के लिए भी पढ़ा और कई निसाब खुद अपने लिए पढ़कर जखीरा आखिरत बनाया। हमारे पास एक नौजवान रहता था, जिसके मुताल्लिक यह मशहूर था कि यह साहिब कशफ है। जन्नत दोजख का भी इसको कश्फ होता है (यानी जन्नत और जहन्नम में क्या हो रहा है, इस नौजवान को मालूम है)। मुझको इसकी सहत में कुछ तरद्दुद था। एक मरतबा वोह नौजवान हमारे साथ खाने में शरीक था कि दफअतन (अचानक) उसने एक चीख मारी और सांस फूलने लगा और कहा मेरी माँ दोजख में जल रही है, इसकी हालत मुझे नजर आई। कुरतबी कहते हैं कि मैं इसकी घबराहट देख रहा था। मुझे ख्याल आया कि एक निसाब उसकी माँ को बख्श दूँ, जिससे उसकी सच्चाई का भी मुझे तजुरबा हो जायेगा। चूनाचें मैंने एक निसाब सत्तर हजार का उन निसाब में से जो अपने लिए पढ़े थे, उसकी माँ को बख्श दिया। मैंने अपने दिल में चुपके ही से बख्शा था और मेरे इस पढ़ने की खबर भी अल्लाह के सिवा किसी को मालूम न थी। मगर

वोह नौजवान फौरन कहने लगा, चचा मेरी माँ दोजख के अजाब से हटा दी गई। (फजाइल जिक्र हिन्दी सफा 132, फजाइले जिक्र उर्दू, सफा 83)

इस झूठे किस्से से कितनी खराबी मुसलमान के अकीदे में आती है।

फजाइल आमाल के बुजुर्गों को सब गैब की बातें मालूम, जन्नत में कौन ऐश कर रहा है, जहन्नम में कौन जल रहा है, नौजवान को दिल के वसवसे की खबर हो रही है। यह किस्सा सरासर कुरआन व हदीस के खिलाफ है। गैब की सारी बातें अल्लाह के सिवा किसी को मालूम नहीं।

कुरआन व हदीस का फैसला

फरमाने इलाहीः उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूट बांधे। (सूरा हूद, पारा 12, आयत 18)

कुरआन हदीस का अकीदाह मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्ल. मर चुके हैं और आप मरने के बाद कयामत तक किसी की कुछ मदद नहीं कर सकते।
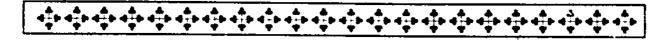
1. फरमाने इलाही : हर जानदार को मौत का मजा चखना है और कयामत के दिन तुम अपने बदले पूरे-पूरे दिये जाओगे। (सूरा आले इमरान, पारा 4, आयत नं. 185)

2. मुहम्मद सल्ल. सिर्फ रसूल ही हैं, इनसे पहले बहुत से रसूल हो चुके हैं। क्या अगर इनका इन्तकाल हो जाए या यह शहीद हो जाए तो तुम इस्लाम से एडियों के बल फिर जाओगे? और जो कोई फिर जाए अपनी एडियो पर तो हरगिज अल्लाह तआला का कुछ ना बिगाड़ेगा। अन करीब अल्लाह तआला शुक्र गुजारों को नेक बदला देगा। (सूरा आले इमरान, पारा 4 आयत नं. 144)

3. फरमाने इलाही : यकीनन खुद आप को भी (नबी सल्ल.) मौत का मजा चखना है और यह सब भी मरने वाले हैं। फिर तुम सब के सब कयामत के दिन अपने रब के सामने झगड़ोगे। उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह तआला पर झूट बोले? और सच्चा दीन जब उनके पास आए तो उसे झूटा बताए? क्या ऐसे काफिर के लिए जहन्नम ठिकाना नहीं। (सूरा जुमर, पारा 24, आयत 30 से 32 तक)
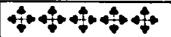
मददगार सिर्फ अल्लाह तआला

4. फरमाने इलाही: जिसने मुझे पैदा किया है और वही मेरी रहबरी फरमाता है। वही है जो मुझे खिलाता पिलाता है। और जब मैं बीमार पड़ जाऊँ तो मुझे शिफा अता फरमाता है और वही मुझे मार डालेगा। फिर जिन्दाह कर देगा। (सूरा अश शुअरा, पारा **19**, आयत **78** से **81** तक)

हर चीज सिर्फ अल्लाह तआला ही से मांगनी चाहिए

फरमाने इलाही : लोगों! तुम पर जो ईनाम अल्लाह तआला ने किये हैं, उन्हें याद करो। क्या अल्लाह के सिवा और कोई भी खालिक (पैदा करने वाला) है जो तुम्हें आसमान से रोजी पहुंचाए। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। पस तुम कहां उलटे जाते हो। (सूरा फातिर, पारा **22**, आयत **3**)

5. फरमाने इलाही : जिन्हें तुम उसके (अल्लाह) के सिवा पुकार रहे हो, वोह तो खजूर की गुठली के छिलके के भी मालिक नहीं। (सूरा फातिर, पारा **22**, आयत **13**)

नबी सल्ल. ने कबर के अन्दर से सलाम का जवाब दिया

1. फजाइल आमाल : इब्राहिम बिन शयबान कहते हैं कि मैं हज से फराग पर मदीना मुनव्वरा हाजिर हुआ और मैंने कबर शरीफ के पास जाकर सलाम अर्ज किया। तो मैंने हुजरे शरीफ के अन्दर से "व आलैइका सलाम" की आवाज सुनी। (फजाइल दरूद शरीफ, हिन्दी सफा 54)

फजाइल आमाल का अकीदाह

मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्ल. कबर में जिन्दाह हैं और अपने मानने वालों की मदद करते हैं।

फजाइल आमाल का अकीदाह

2. फजाइल आमाल :- सय्यद अहमद रिफाई मशहूर बुजुर्ग अकाबिर सुफिया में से हैं। उनका किस्सा मशहूर है कि जब **555** हिजरी में वोह जियारत के लिए हाजिर हुए और कबर अतहर के करीब खड़े होकर दो शअर पढ़े तो दस्त (हाथ) मुबारक बाहर निकला और उन्होंने उसको चूमा। (फजाइल दरूद हिन्दी सफा 163)
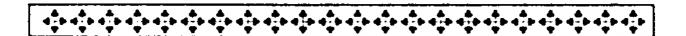
फजाइल आमाल का अकीदाह

3. नबी सल्ल. भूखे को रोटी देते हैं।

फजाइल आमाल : बुजुर्ग फरमाते हैं कि एक रोज मुझे बहुत भूख लगी (ना मालूम कई दिन का फाका होगा)। मैंने अल्लाह ज़ल्ल. शाहनहू से दुआ कि तो मैने देखा कि नबी सल्ल. की रूह मुकद्दस आसमान से उतरी और हुजूर अकदस सल्ल. के हाथ एक रोटी थी। गौया अल्लाह जल्ल शाहनहू ने हुजूर सल्ल. को इरशाद फरमाया था कि रोटी मुझे मरहमत फरमाए। (फजाइल दरूद शरीफ हिन्दी, किस्सा 12, सफा 155)

फजाइल आमाल का अकीदाह

4. नबी सल्ल. बीमार को शिफा देते हैं।

किस्सा 15 पर तहरीर फरमाते हैं कि मेरे वालिद ने मुझ से बताया कि वोह एक दफा बीमार हुए तो ख्वाब में नबी करीम सल्ल. की जियारत हुई। हुजूर सल्ल. ने इरशाद फरमाया, ''मेरे बेटे कैसी तबीअत है।'' इसके बाद शिफा की बशारत (खुश

खबरी) अता फरमाई और अपनी दाढ़ी मुबारक में से दो बाल मरहमत फरमाए। मुझे उसी वक्त सहत हो गई और जब आंख खुली तो वोह दोनो बाल मेरे हाथ में थे। (फजाइल दरूद शरीफ हिन्दी, किस्सा 15, सफा 155)

कुरआन हदीस का फैसला

ऐसी बात या अमल (काम) जो रसूल अकरम सल्ल. से साबित न हो, हदीस या सुन्नत कह कर लोगों के सामने पेश करने की सजा जहन्नम है।

फरमाने रसूल सल्ल. : रसूल अल्लाह सल्ल. ने फरमाया जिसने जानबूझ कर झूट मेरी जानिब मनसूब किया, वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले। (हदीस बुखारी मुस्लिम)

फजाइल आमाल का अकीदाह

5. नबी सल्ल. दरहम देते हैं।

सूफी अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अबी जरआ फरमाते हैं कि मैं अपने वालिद अबू अब्दुल्लाह बिन खफीफ के साथ मक्का मुकर्रमा में हाजिर

हुआ। बड़ी सख्त तंगी थी। फाका बहुत सख्त हो गया था। इसी हालत में हम मदीना तय्यब हाजिर हुए और खाली पेट ही रात गुजारी। मैं उस वक्त तक नाबालिग था। बार बार वालिद के पास जाता और जाकर भूख की शिकायत करता। मेरे वालिद उठ कर कबर शरीफ के करीब हाजिर हुए और अर्ज किया "या रसूल अल्लाह सल्ल. मैं आपका मेहमान हूँ।" ये अर्ज करके वहीं मुराकबे में बैठ गया। (मुराकबा यानी घुटनों में सर रख कर बैठना)। थोड़ी देर बाद मुराकबे से सर उठाया और सर उठाने के बाद कभी रोने लगते, कभी हंसने लगते। किसी ने इसका सबब पूछा तो कहने लगे कि मैंने हुजूर अकदस सल्ल. की जियारत की (यानी देखा)। आप सल्ल. ने मेरे हाथ में चन्द दरहम रख दिये। हाथ खोला तो इसमें दरहम रखे हुए थे। सूफी जी कहते हैं कि हक तआला शाहनहू ने इनमें इतनी बरकत फरमाई कि हमने शिराज लौटने तक इसी में से खर्च किया। (फजाइल हज्ज, किस्सा 23, सफा 170)

इस वाकया के बारे में

कुरआन-हदीस का फैसला

रसूल अल्लाह सल्ल. ने फरमाया, जिसने मेरी जानिब झूठी बात मनसूब की, वोह आग में दाखिल होगा। (बुखारी व मुस्लिम)

फजाइल आमाल का अकीदाह

6. **नबी सल्ल. फजाइल आमाल के बुजुर्गो की किताब चैक करते हैं।**

अबू इसहाक नहशल कहते हैं कि मैं हदीस की किताबें लिखा करता था और उसमें हुजूर सल्ल. का पाक नाम इस तरह लिखा करता था ''कालन नबियू सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तसालिमन'' मैंने ख्वाब में देखा कि नबी सल्ल. ने मेरी लिखी हुई किताब मुलाहेजा फरमाई (यानी देखी) और मुलाहेजा फरमाकर इरशाद फरमाया, यह उमदाह (अच्छी) है। (फजाइल दरूद शरीफ, सफा 760, किस्सा 32)

फजाइल आमाल का अकीदाह

7. नबी सल्ल. कबर के अन्दर से सलाम का जवाब देते हैं।

अल्लामा सरवावी ने कोल बदीअ में सलमान बिन सहीम से नकल किया कि मैंने ख्वाब में हुजूर अकदस सल्ल. की जियारत की। मैंने दरयाफत किया (पूछा), या रसूल अल्लाह सल्ल. यह जो लोग हाजिर होते हैं और आप पर सलाम करते हैं, आप उसको समझते हैं? हुजूर सल्ल. ने इरशाद फरमाया, हाँ समझता हूँ और उनके सलाम का जवाब भी देता हूँ। इब्राहिम बिन शैबान कहते हैं कि मैं हज से फारिग पर मदीना मुनव्वरा हाजिर हुआ और मैंने कबर शरीफ के पास जाकर सलाम अर्ज किया तो मैंने हुजरे शरीफ के अन्दर से ''व आलेइका सलाम'' की आवाज सुनी। (फजाइल दरूद शरीफ, सफा 681)

कुरआन हदीस का फैसला

अल्लाह तआला से बिना वसीला (वास्ता) मांगना चाहिए। नबी, रसूल, शहीद उनके मरने के बाद

किसी का भी वसीला लेना हराम और नाजाइज है।

1. फरमाने इलाही : जब मेरे बन्दे मेरे बारे में आपसे सवाल करें (यानी अल्लाह करीब है या दूर) तो आप कह दें कि मैं बहुत ही करीब हूँ। पुकारने वाले की पुकार को, जब कभी वोह मुझे पुकारे कबूल करता हूँ। इसलिए लोगों को भी चाहिए कि वोह मेरी बात मान लिया करें और मुझ पर ईमान रखे। यही उनकी भलाई का बाइस है। (सूरा बकरा, पारा 2, आयत 186)

2. फरमाने इलाही : तुम्हारे परवरदीगार ने फरमाया (सिर्फ) मुझसे दुआ करो। मैं तुम्हारी दुआ कबूल करूंगा। जो लोग घमण्ड में आकर मेरी इबादत से मुंह मोड़ते हैं, वो जल्द ही जलील व ख्वार होकर जहन्नम में दाखिल होंगे। (सूरा मुमिन, पारा 24, आयत 60)

3. फरमाने इलाही : कौन है जो बेकरार व लाचार की दुआ सुनता है, जबकि वोह उसे पुकारे और कौन उसकी तकलीफ दूर करता है? (और कौन है जो) तुम्हें जमीन का खलिफा बनाता है? क्या अल्लाह
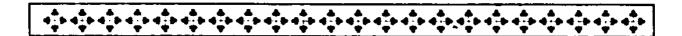
के साथ कोई और इलाह (माबूद) भी (यह काम करने वाला) है? तुम लोग कम ही नसीहत हासिल करते हो। (सूरा नमल, पारा 20, आयत 62)

इस्लाम में सिर्फ तीन तरह का वसीला (वास्ता) जाइज है।

1. जिन्दाह नेक इन्सान का
2. जो कोई काम जिन्दगी में सिर्फ अल्लाह तआला के लिए किया हो। जब कोई मुसीबत आए तो उस नेक काम को वसीला बनाना जाइज है।
3. अल्लाह तआला के अच्छे अच्छे नामों का वसीला जाइज है। (आराफ 180)

फजाइल आमाल का अकीदाह

नबी सल्ल. का वसीला कबर वालों का वसीला जाइज है।

दलील झूटी हदीस आदम अलैहिस्सलाम का नबी सल्ल. की जात को वसीला बनाने की झूटी हदीस। गजब तो ये है कि ऐसी हदीस भी लाई जाती है

जिसमें आदम अलैहि. से गुनाह सरजद हो जाने का किस्सा भी बयान फरमाया गया है और यह भी कि फिर उनकी तौबा नबी करीम सल्ल. के वसीले से दुआ करने पर कुबूल हुई।

हदीस यह है:-

तर्जुमा :- जब आदम से गुनाह सरजद हो गया तो उन्होंने आसमान की तरफ सर उठाकर मुहम्मद सल्ल. के वसीले से मगफिरत की दुआ मांगी। अल्लाह तआला ने पूछा "मुहम्मद कौन है?" आदम अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि जब तूने मुझे पैदा किया तो मैने सर उठा कर अर्श की तरफ देखा और वहाँ ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह लिखा हुआ पाया। तो मैं समझ गया कि जिसका नाम तूने अपने नाम के साथ रखा है, उससे ज्यादा अजमत वाला कोई नाम नहीं हो सकता। अल्लाह तआला ने कहा, "ऐ आदम! तूने सच कहा, वह नबी आखरी है और तुम्हारी औलाद में से होंगे। अगर वोह न होते तो तुम भी पैदा न किये जाते।

और एक दूसरी हदीस में यों है, "लव लाका खलकतुल

अमलाका'' कि ऐ नबी सल्ल. अगर आप नहीं होते तो मैं दुनिया को पैदा ना करता। (फजाइल जिक्र हिन्दी, सफा नं 148, उर्दू सफा नं 94)

अल्लाह तआला व रसूल सल्ल. पर कितना बड़ा इल्जाम है। कुरआन करीम में तो अल्लाह तआला आदम अलैहिस्सलाम की तौबा की कबूलियत के सिलसिले में इरशाद फरमाता है।

फरमाने इलाही : पस सीख लिये आदम ने अपने रब से चन्द बातें और अल्लाह तआला ने उनकी तौबा कबूल फरमाई। बेशक वही तौबा कबूल करने वाला और रहम करने वाला है। (सूरा बकरा, पारा 1, आयत 37)

अल्लाह तआला तो फरमाता है कि हमने आदम को तौबा की दुआ सिखाई और उसके खिलाफ यह झूटी हदीस कहती है कि यह आदम अलैहिस्सलाम की अपनी समझ थी। यहाँ तक कि अल्लाह तआला को पूछना पड़ा कि तुमने आखिरकार मुहम्मद सल्ल. का (वसीला कैसे पकड़ा)। मुफस्सरीन का इस बात पर इत्तेफाक है। कि वोह दुआ कुरआन में बयान कर दी गई है। वोह दुआ यह है:-

फरमाने इलाही : (आदम अलैहिस्सलाम और हव्वा

ने) कहा, ऐ हमारे रब! हमने अपनी जानों पर जुल्म किया और अगर तू हमको ना बख्शे और हम पर रहम ना करे तो हम जरूर तबाह हो जायेंगे। (सूरा आराफ, पारा 8, आयत 23)

दूसरा जुल्म इस झूटी हदीस में ये है कि दुनिया की पैदाइश का मकसद नबी सल्ल. की जात को ठहराया गया है। हालांकि कुरआन फरमाता है- मैंने नहीं पैदा किया जिन्न व इन्सान को मगर अपनी इबादत के लिए। (सूरा जारियात, पारा 27, आयत 56)

साबित हुआ कि दुनिया की पैदाइश का मकसद सिर्फ अल्लाह तआला की बन्दगी है, ना कि जात नबी सल्ल.। खुद नबी सल्ल. को अल्लाह की बन्दगी के लिए पैदा किया गया है।

2. दलील झूटा किस्सा : अबु हफस समरकन्दी अपनी किताब रौनक अल मजालिस में लिखते हैं कि बलख में एक ताजिर था जो बहुत ज्यादा मालदार था। उसका इन्तकाल हुआ। उसके दो बेटे थे। मिरास में उसका माल आधा आया। तकसीम हो गया। लेकिन तरके में तीन बाल भी हुजूर सल्ल. के मौजूद थे। एक एक दोनों ने लिया, तीसरे बाल के मुताल्लिक बड़े भाई ने कहा कि
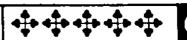
इसका आधा आधा कर ले। छोटे भाई ने कहा, हरगिज नहीं, खुदा की कसम हुजूर का मूये मुबारक (बाल) नहीं काटा जा सकता। बड़े भाई ने कहा, क्या तू इस पर राजी है कि यह तीनों बाल तू ले ले और यह माल सारा मेरे हिस्से में लगा दे। छोटा भाई खुशी से राजी हो गया। बड़े भाई ने सारा माल ले लिया और छोटे भाई ने तीनो मूये मुबारक ले लिये। वोह उनको अपनी जेब में हर वक्त रखता और बार बार निकालता। उनकी जयारत करता और दरूद शरीफ पढ़ता। थोड़ा ही जमाना गुजरा था कि बड़े भाई का सारा माल खत्म हो गया और छोटा भाई बहुत ज्यादा मालदार हो गया। जब इस छोटे भाई की वफात हुई तो सोलाह (नेक बुजुर्ग) में से बाज ने हुजूर अकदस सल्ल. की ख्वाब में जियारत की। हुजूर सल्ल. ने इरशाद फरमाया कि जिस किसी को कोई जरूरत हो, इसकी कबर के पास बैठ कर अल्लाह तआला शाहनहू से दुआ किया करें (बदीअ)। (फजाइल दरूद शरीफ, किस्सा 35, हिन्दी सफा नं 138, उर्दू सफा 93)

इस झूटे किस्से के बारे में रसूल सल्ल. का फैसला भी सुन लो।

फरमाने रसूल सल्ल. :- रसूल अल्लाह सल्ल. ने फरमाया
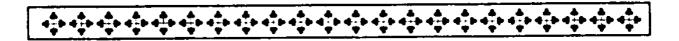
जिसने मेरी तरफ झूटी बात मनसूब की, वोह आग में दाखिल होगा। (हदीस बुखारी व मुस्लिम)

कुरआन व हदीस का अकीदाह

जब कोई नबी, सहाबी, बुजुर्ग, पीर, वली या आम इन्सान मर जाता है तो ना वो सुन सकता है, ना देख सकता है, ना बोल सकता है।

1. फरमाने इलाही: और अन्धा और आँखों वाला बराबर नहीं और ना अन्धेरा और रोशनी और न छांव और ना धूप, और जिन्दे और मुर्दे बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह तआला जिसको चाहता है, सुनवा देता है और आप उन लोगों को नहीं सुना सकते जो कबरों में है। (सूरा फातिर, पारा **22**, आयत **19-22**)

2. फरमाने इलाही : बेशक आप मुर्दो को नहीं सुना सकते और ना बहरों को (अपनी) आवाज सुना सकते है जबकि वोह पीठ फैर कर मुड़ गये हों। (सूरा रूम, पारा **21**, आयत **52**)

3. फरमाने इलाही (ऐ नबी सल्ल.) आप कह दीजिए कि जितने लोग आसमानों और जमीन में हैं,
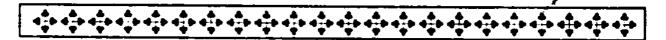
किसी को भी गैब का इल्म नहीं, सिवाय अल्लाह के और उनको यह भी खबर नहीं के वोह कब जी कर कबरों से उठेंगे। (सूरा नमल, पारा 20, आयत 65)

4. फरमाने इलाही : और वो दूसरी हस्तियां जिन्हें अल्लाह को छोड़कर लोग पुकारते हैं, वो किसी चीज के भी खालिक (पैदा करने वाले) नहीं है, बल्कि खुद मखलूक (पैदा किये हुए) हैं। मुर्दा है न कि जिन्दा और उन्हें कुछ मालूम नहीं कि उन्हें कब उठाया जायेगा। (सूरा नहल, पारा 14, आयत 20-21)

मगर फजाइल आमाल के बुजुर्ग मरने के बाद हंस सकते हैं।

1. मरने के बाद बुजुर्ग हसने लगे:- शेख इबने अलजला मशहूर बुजुर्ग हैं। वोह फरमाते हैं कि जब मेरे वालिद का इन्तेकाल हुआ और उनको नहलाने के लिए तख्ते पर रखा तो हंसने लगे। नहलाने वाले छोड़ कर चल दिये। किसी को हिम्मत उनको नहलाने की न पड़ती थी। एक और बुजुर्ग उनके रफीक आये। उन्होंने गुस्ल दिया। (फजाइल सदकात, सफा 478)

2. **मरने के बाद बुजुर्ग ने अंगूठा पकड़ लिया:-** एक बुजुर्ग कहते हैं कि मैंने एक मुरीद को गुस्ल दिया। उसने मेरा अंगूठा पकड़ लिया। मैंने कहा, मेरा अंगूठा छोड़ दे। मुझे मालूम है कि तू मरा नहीं। यह एक मकान है, दूसरे मकान में इन्तकाल है। उसने मेरा अंगूठा छोड़ दिया। (फजाइल सदकात, सफा 478)

3. **मरने के बाद एक बुजुर्ग ने आंखें खोल दी:-** अबू सईद खजार कहते हैं कि मैं एक मरतबा मक्का मुकर्रमा में था। बाब बनी शैबा से निकल रहा था। दरवाजे से बाहर मैंने एक निहायत खुबसूरत आदमी को मरे हुए पड़ा देखा। मैं जो उसको गौर से देखने लगा तो वोह मेरी तरफ देखकर हंसने लगा और कहने लगा, अबू सईद तुम्हें मालूम नहीं कि (मुहब्बत वाले) दोस्त मरा नहीं करते। एक आलम से दूसरे आलम में मुनतकिल हो जाते हैं। (फजाइल सदकात, सफा 485)

कुरआन हदीस का अकीदाह

जो नमाज कजा हो जाए (यानी नमाज का वक्त निकल

जाए और दूसरी नमाज का वक्त आ जाए)। जैसे आदमी रात को सो गया और फजर में आंख नहीं खुली और सूरज निकल जाए या आदमी नमाज पढ़ना भूल जाए। ऐसी सूरत में आंख खुलते ही नमाज पढ लें तो उसकी नमाज हो जाएगी। उस इन्सान पर कुछ गुनाह नहीं।

1. दलील फरमाने रसूल सल्ल. :- हजरत अनस रजि. रिवायत करते हुए कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल. ने फरमाया जो शख्स नमाज को भूल जाए तो जिस वक्त याद आये पढ़ ले, नहीं उसका बदला मगर यह (नमाज ही)। (हदीस सही बुखारी)

   इस हदीस शरीफ से मालूम हुआ कि अगर कोई आदमी नमाज पढ़नी भूल जाए और उसका वक्त निकल जाए यानी कजा हो जाए तो जिस वक्त याद आये, वह उस वक्त पूरी नमाज पढ़ ले और इसी तरह अगर कोई सो जाये तो सुबह को ऐसे वक्त आंख खुले कि सूरज निकल चुका हो तो जागने के बाद उसी वक्त पूरी नमाज पढ़ लेनी चाहिए।

एक दफा नींद में सूरज निकल आया फिर आप सल्ल.
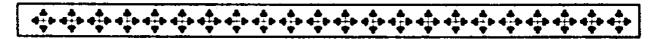
ने और सब सहाबा ने फजर की नमाज पढ़ी।

2. हजरत नाफे बिन जुबैर रजि. से रिवायत है कि उन्होंने अपने बाप से सुना कि रसूल अल्लाह सल्ल. ने एक सफर में फरमाया, देखो आज रात कौन हमारी हिफाजत करेगा। ऐसा ना हो कि हम फजर की नमाज में जाग ना सकें। हजरत बिलाल रजि. ने कहा कि मैं ख्याल रखूंगा। फिर उन्होंने पूरब की तरफ मुंह किया। लेकिन अपने कान बंद कर दिये (यानी बेखबर हो गये)। जब सूरज़ गरम हुआ तो जागे और खड़े हुए। रसूल अल्लाह सल्ल. और सहाबा भी जागे। आपने फरमाया, ऊँट की नकेल पकड़ कर चलो, क्योंकि यहाँ शैतान की जगह है। फिर (नई जगह पहुंच कर) रसूल अल्लाह सल्ल. ने फरमाया, वजू करो और हजरत बिलाल रजि. ने अज़ान दी। आपने दो रकअत नमाज पढ़ी और सब लोगों ने दो रकअते (दो सुन्नत) पढ़ी। फ़िर फजर की नमाज पढ़ी और जो शख्स नमाज भूल जाए, उसे जब याद आये तो नमाज पढ़ ले। (हदीस बुखारी)

3. मजबूरी में नबी सल्ल. और हजारों सहाबा की 4

नमाज एक साथ कजा हुई।

दलील फरमाने रसूल सल्ल. हजरत अब्दुल्ला बिन मसउद रजि. से रिवायत है कि हम रसूल अललाह सल्ल. के साथ (जंग अहज़ाब) में थे। तो हम लोग जुहर, असर, मगरिब और ईशा की नमाजें पढ़ने से रोक दिये गये (यानी काफिरों ने हमें नमाजें पढ़ने का मौका न दिया और नमाजों का वक्त निकल गया)। मेरे दिल पर (इन नमाजों का छुटना) बहुत भारी मालूम हुआ। लेकिन मैंने अपने मन ही में कहा कि हम तो रसूल अल्लाह सल्ल. के साथ हैं और अल्लाह की राह में हैं (फिर जब मौका मिला तो)।

रसूल अल्लाह सल्ल. ने हजरत बिलाल रजि. को हुकम दिया और उन्होंने अकामत कही और आपने जोहर की नमाज पढ़ाई। फिर उन्होंने अकामत कही और आपने असर की नमाज पढ़ाई, फिर उन्होंने अकामत कही और आपने मगरीब की नमाज पढ़ाई। फिर उन्होंने अकामत कही और आपने इशा की नमाज पढ़ाई। फिर आपने हमारी तरफ मुंह करके फरमाया। इस वक्त पूरी जमीन

पर तुम्हें छोड़कर कोई जमाअत ऐसी नहीं है जो अल्लाह को याद करती हो। (हदीस नसई जिल्द 2, सफा नं. 18 सनद सही)

इस हदीस से मालूम हुआ कि अगर किसी मजबूरी की वजह से नमाजें छूट जाए तो उन सब को जिस तरह अभी ऊपर वाली हदीस में बयान हुआ है, उसी तरह पढ़ लेना चाहिए। लेकिन यह भी याद रहे कि जानबूझ कर ऐसा हरगिज ना करें।

फजाइल आमाल का अकीदाह

जो नमाज कजा हो गई हो चाहे उसको बाद में पढ़ भी लें, लेकिन इस नमाज को वक्त पर ना पढ़ने की वजह से 2 करोड़ 88 लाख बरस जहन्नम में जलाया जाएगा।

दलील झूटी हदीस- हुजूर सल्ल. से नकल किया गया है कि जो शख्स नमाज को कजा कर दे, गौ वोह बाद में पढ़ भी ले। फिर भी अपने वक्त पर न पढ़ने की वजह से एक हुकब जहन्नम में जलेगा और हुकब की मिकदार 80 बरस की होती है और एक बरस 360 दिन का और कयामत का एक दिन एक हजार बरस के बराबर होगा। इस हिसाब से एक हुकब की मिकदार दो
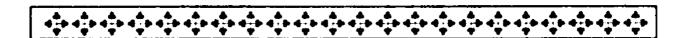
करोड़ 88 लाख बरस हुई।

इस झूटी हदीस को बयान करने वालों के लिए रसूल सल्ल.का फैसला

फरमाने रसूल सल्ल.:- हजरत सलमा रजि. से रिवायत है कि मैंने नबी अकरम सल्ल. को यह फरमाते सुना है कि जो शख्स मेरी तरफ ऐसी बात मनसूब करे, जो मैंने नहीं कही, वोह अपनी जगह जहन्नम में बना ले। (हदीस सही बुखारी)

कुरआन व हदीस का अकीदाह

आप नबी सल्ल. और आपसे पहले जितने नबी, वली, सहाबा, बुजुर्ग सब मर चुके, खिजिर अलैहिस्सलाम भी मर चुके।

> फरमाने इलाही : (ऐ नबी सल्ल.) आप से पहले किसी इन्सान को भी हमने हमेशगी नहीं दी। क्या अगर आप मर गये तो वोह हमेशा के लिए रह जायेगें। हर जानदार मौत का मजा चखने वाला है। (सूरा अम्बिया पारा 17 आयत 34-35)
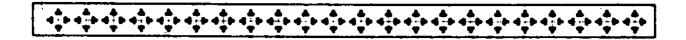
फजाइल आमाल का अकीदाह

खिज्र अलैहिस्सलाम जिन्दाह है और आज भी हैं। नई नई दुआ सिखाते हैं, अपनी नमाज का टाइम टेबल बताते हैं।

यह किस्सा पढ लें फजाइल हज्ज किस्सा 9, सफा 164, हज्ज किस्सा 62, सफा 279, हिन्दी सफा 48 फजाइले दरूद

1. एक बुजुर्ग हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम से अपनी मुलाकात का बहुत तवील किस्सा नकल करते हैं। आखिर में हजरत खिज्र अलैहि. ने फरमाया, मैं सुबह की नमाज मक्का मुकर्रमा में पढ़ता हूँ और जोहर की नमाज मदीना तय्यबा में पढ़ता हूँ और असर की नमाज बेतुल मक़दिस में और मग़रिब की तूरि सिना पर और इशा कीसदि सिकन्दरी पर (फजाइल हज्ज, किस्सा 62, सफा 279)

2. एक बुजुर्ग फरमाते हैं कि मुझ पर एक मरतबा कबज (दिल तंगी) और खौफ का शदीद गलबा हुआ। मैं परेशान हाल होकर बगैर सवारी और
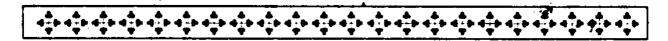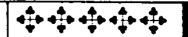
तोशा के मक्का मुकर्रमा चल दिया। तीन दिन तक इसी तरह बगैर खाये-पीये चलता रहा। चौथे दिन मुझे ख्वाब की शिद्दत से अपनी हलाकत का अन्देशा हो गया और जंगल में कहीं सायादार दरख्त का भी पता न था कि इसके साये में बैठा जाता। मैंने अपने आपको अल्लाह के सुपुर्द कर दिया और किबले की तरफ मुंह करके बैठ गया और मुझे नींद सी आ गई। तो मैंने ख्वाब में एक शख्स को देखा कि मेरी तरफ हाथ बढ़ा कर फरमाया, लाओ हाथ बढ़ाओ। मैंने हाथ बढ़ाया-उन्होंने मुझसे मुसाफा किया और फरमायाः तुम्हें खुशखबरी देता हूँ कि तुम सही सालिम हज्ज भी करोगे और कबर अतहर की जियारत भी करोगे। मैंने कहा- अल्लाह आप पर रहम करे, आप कौन हैं? फरमाया - मैं खिज्र हूँ। मैंने अर्ज किया कि मेरे लिए दुआ कीजिए। फरमायाः यह अलफाज तीन मरतबा कहो। (पूरा वाक्या आप पढ़ लें)। (फजाइल हज्ज, किस्सा 61, सफा 277)

कुरआन व हदीस का अकीदाह

मोअज्जात पैगम्बरों को मिलते हैं और करामात अवलिया
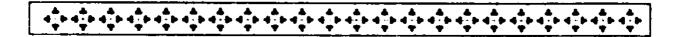
अल्लाह को नबी या वली के इख्तेयार में नहीं होते कि जब चाहे चमत्कार दिखा दें। यह उसी वक्त मुमकिन हो सकता है जब अल्लाह तआला का हुकूम हो।

फरमाने इलाही : पस फिरओनी सूरज निकलते ही उनको पकड़ने के लिए निकले। पस जब दोनों ने एक दूसरे को देख लिया तो मूसा के साथियों ने कहा, हम तो यकीनन पकड़ लिये गये। मूसा ने कहा- हरगिज नहीं! यकीन मानों मेरा रब मेरे साथ है जो जरूर मुझे राह दिखायेगा। हमने मूसा की तरह वही (हुकूम) भेजी कि दरिया पर अपनी लकड़ी मार, पस उसी वक्त दरया फट गया और हर एक हिस्सा पानी का मिसल बड़े सारे पहाड़ के हो गया। (सूरा शुअरा, पारा 19, आयत 61, 62, 63)

फजाइल आमाल का अकीदाह

बुजुर्गो को अल्लाह तआला के हुकम की जरूरत नहीं। जब चाहे करामात दिखा सकते हैं, अपने हुकूम से जमुना नदी के अन्दर रास्ता बना सकते हैं। (फजाइल आमाल, सदकात 389 सफा)

मैंने अपने वालिद नुरुल्ला मरकदहु से एक किस्सा अक्सर सुना। वोह फरमाते थे कि एक शख्स को पानीपत

एक जरूरत से जाना था। रास्ते में जमुना पड़ती थी, जिसमें इत्तेफाक से तुगयानी की सूरत थी। कश्ती भी उस वक्त न चल सकती थी। यह शख्स बहुत परेशान था। लोगों ने उससे कहा कि फलां जंगल में एक बुजुर्ग रहते हैं, उनसे जाकर अपनी जरूरत का इजहार करो। अगर वोह कोई सूरत तजवीज कर दें तो शायद काम चल जाये। वैसे कोई सूरत नहीं है। लेकिन वोह बुजुर्ग अव्वल अव्वल बहुत खफा होंगे, इनकार करेंगे, इससे मायूस न होना चाहिए। चूनांचे यह शख्स वहां गया। उस जंगल में एक झोपड़ी पड़ी हुयी थी। उसमें उसके अहलो अयाल (बीवी-बच्चे) भी रहते थे। उस शख्स ने बहुत रोकर अपनी जरूरत का इजहार किया कि मुकदमे की कल तारीख है। जाने की कोई सूरत नहीं। अव्वल तो उन्होंने हसब आदत खूब डांटा कि मैं क्या कर सकता हूँ। मेरे कब्जे में क्या है। उसके बाद जब उसने बहुत ज्यादा आजजी की तो उन्होंने फरमाया कि जमुना से जाकर कह दो कि ऐसे शख्स ने मुझे भेजा है, जिसने उम्र भर न कभी कुछ खाया, न बीवी से सोहबत (हमबिस्तरी) की। यह शख्स वापिस हुवा और उनके कहने के मुताबिक अमल किया। जमुना का पानी एकदम रूक गया और यह शख्स पार हो गया। जमुना फिर हसब मामूल (पहले

की तरह) चलने लगी। लेकिन उस शख्स के वापिस होने के बाद उन बुजुर्ग की बीवी ने रोना शुरू कर दिया कि तूने मुझे जलील और रूसवा किया। बगैर खाये तू खुद फूल कर हाथी बन गया। इसका तो तुझे इख्तियार है। अपने मुताल्लिक जो चाहे झूट बोल दे। लेकिन यह बात की तू कभी बीवी के पास नहीं गया, इस बात ने मुझे रूसवा कर दिया। इसका मतलब तो ये हुवा कि यह औलाद जो फिर रही है, यह सब हराम की औलाद है। इन बुजुर्ग ने अव्वल तो औरत से यह कहा कि तुझ से इसका ताल्लुक नहीं। जब मैं औलाद को अपनी औलाद बताता हूँ फिर क्या ऐतराज है। मगर वोह बेतहाशा रोती रही कि तूने मुझे जिना (बदकारी) करने वाली बना दिया। इस पर उन बुजुर्ग ने कहा कि गौर से सुन, मैंने जब से होश संभाला है, कभी अपनी ख्वाइश नफ्स के लिए कोई चीज नहीं खाई। हमेशा जो खाया, महज इस इरादे और नियत से खाया कि इससे अल्लाह की इताअत के लिए बदन को कुव्वत पहुंचे और जब भी तेरे पास गया तो हमेशा तेरा हक अदा करने का इरादा रहा, कभी अपनी ख्वाइश के तकाजे से सोहबत नहीं की। (फजाइल सदकात, सफा 389)

ईसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से दुआ की, आसमान से दसतरखान उतरा

फरमाने इलाही: वोह वक्त याद के काबिल है, जबकि हवारियो ने (ईसा अलैहिस्सलाम के साथी) अर्ज किया कि ऐ ईसा बिन मरयम क्या आपका रब ऐसा कर सकता है कि हम पर आसमान से एक खवान नाजिल फरमा दें?

आपने फरमाया कि अल्लाह से डरो। अगर तुम ईमानदार हो। वोह बोले कि हम यह चाहते हैं कि इसमें से खाये और हमारे दिलों को पूरा इत्मिनान हो जाये और हमारा ये यकीन और बढ़ जाये कि आपने हम से सच बोला है और हम गवाही देने वालों में से हो जायें। ईसा इब्ने मरयम ने दुआ कि ऐ अल्लाह हमारे परवरदीगार! हम पर आसमान से खाना नाजिल फरमा कि वोह हमारे लिए यानी हममें जो अव्वल है और जो बाद में, सबके लिए एक खुशी की बात हो जाये और तेरी तरफ एक निशान हो जाये और तू हमको रिजक अता फरमा दे और तू सब अता करने वालों से अच्छा है। (सूरा माइदाह, पारा 7, आयत 112 से 114 तक)

फजाइल आमाल के बुजुर्ग भी ईसा अलैहिस्सलाम के बराबर उनके पास भी आसमान से दस्तरखवान उतर आया। (फजाइल सदकात, सफा 557)

हजरत इब्राहिम खवास कहते हैं कि मैं एक मरतबा जंगल में जा रहा था। रास्ते में एक नसरानी साहिब (ईसाइ मौलवी) मुझे मिला, जिसकी कमर में जनार रपटका या धागा वगैराह (जो कुफर की अलामत के तौर पर काफिर बांधते हैं) बंध रहा था, उसने मेरे साथ रहने की ख्वाहिश जाहिर की (काफिर फकीर अकसर मुसलमान फुकरा की खिदमत में रहते चले आए हैं)। मैंने साथ ले लिया, सात दिन तक हम चलते रहे (न खाना न पीना)। सातवें दिन उस नसरानी ने कहा-ऐ मुहम्मदी कुछ अपनी फतूहात (चमत्कार) दिखाओ (कई दिन हो गये कुछ खाना नहीं)। मैंने अल्लाह तआला शाहनहु से दुआ की किया अल्लाह इस काफिर के सामने मुझे जलील ना फरमां, मैंने देखा कि फौरन एक खवान सामने रखा गया, जिसमें रोटियां, भूना हुआ गोश्त और तरोताजा खजूरें और पानी का लौटा रखा हुआ था। हम दोनों ने खाया, पानी पीया और चल दिये। सात दिन तक चलते रहे। सातवें दिन मैंने (इस ख्याल से कि वोह नसरानी फिर न कह दे) जल्दी करके इस नसरानी से कहा कि

इस मरतबा तुम कुछ दिखाओ। अब की तुम्हारा नम्बर है, वोह अपनी लकड़ी पर सहारा लगाकर खड़ा हो गया और दुआ करने लगा, जब ही दो खवान जिसमें हर चीज उससे दुगनी थी, जो मेरे खवान पर थी, सामने आ गई। मुझे बड़ी गैरत आई, मेरा चेहरा फक हो गया और मैं हैरत में रह गया और मैंने रंज की वजह से खाने से इनकार कर दिया। उस नसरानी ने मुझ पर खाने का इसरार किया। मगर में उजर ही करता रहा। उसने कहा कि तुम खाओ। मैं तुमको दो बशारते (खुशखबरी) सुनाऊँगा। जिनमें से पहली यह है कि अशहदु अल्लाह ला इलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्ना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल. मैं मुसलमान हो गया और यह कहकर जनार (धागा) तोड़ फैंक दिया और दूसरी बशारत यह है कि मैंने जो खाने के लिए दुआ की थी वोह यही कह कर की थी कि या अल्लाह इस मुहम्मदी का तेरे यहाँ मरतबा है तो इसके तूफैल तू हमें खाना दे। इस पर यह खाना मिला है और इसी वजह से मैं मुसलमान हुवा हूँ। (फजाइल सदकात, जिल्द 2, सफा 557)

हमारे नबी हजरत मुहम्मद सल्ल. उम्मी थे (यानी अनपढ़)।

फरमाने इलाही : सो अल्लाह तआला पर ईमान लाओ और उसके नबी उम्मी (अनपढ़) पर जो के अल्लाह तआला पर और उसके अहकाम पर ईमान रखते हैं। (सूरा आराफ, पारा 1, आयत 158)

फजाइल आमाल के बुजुर्ग भी उम्मी हैं, नबी सल्ल. के बराबर

शेख अब्दुल अजीज दबाग करीब ही जमाने में एक बुजुर्ग गुजरे हैं जो बिलकुल उम्मी (अनपढ़) थे। मगर कुरआन शरीफ की आयत हदीस कुदसी हदीस नबवी और माजू हदीस को अलैहदा अलैहदा बता देते थे और कहते थे कि मुतकल्लिम की जबान से जब लफ्ज निकलते हैं तो उन अलफाज के नूर से मालूम हो जाता है कि किसका कलाम है कि अल्लाह पाक के कलाम का नूर अलैहदाह है और हुजूर अलैहिस्सलाम का नूर दूसरा है और दूसरे कलामों में दोनों नूर नहीं होते। (फजाइल जिक्र, सफा 350)

फज़ाइले आमाल के बुजुर्गों को डोल और रस्सी की जरूरत नहीं, कुए का पानी थूकते ही ऊपर आ गया

दलाइलुल खैरात की वज्ले तालीफ (लिखने की वजह) मशहूर है कि मुअल्लिफ (लिखने वाला) के सफर में वुजू के लिए पानी की जरूरत थी और डोल-रस्सी के न होने की वजह से परेशान थे। एक लड़की ने यह हाल देखकर दर्याफ्त किया (पूछा) और कुएं के अन्दर थूक दिया। पानी किनारे तक उबल आया। मुअल्लिफ ने हैरान होकर वजह पूछी, उसने कहा यह बरकत है दरूद शरफ की, जिसके बाद उन्होंने यह किताब ''दलाइलुल खैरात'' तालीफ की (लिखी)। (फजाइले दरूद हिन्दी, सफा 123, किस्सा 6)

अल्लाह के रसूल सल्ल. जब मदीना शरीफ में आये तो सबसे ज्यादा परेशानी पानी की ही थी। कुआ यहुदी के कब्जे में था। उसमान रजि. ने कुआ खरीदकर मुसलमनों को दिलाया। आप सल्ल. और सहाबा ने तो ऐसा नहीं किया। यह लड़की कौन थी, न कोई सहाबिया थी, न कोई वलिया थी। इसका मर्तबा नबी से भी ज्यादा बढ़ गया। अल्लाह की पनाह।

कब्र से मुश्क व अम्बर की खुशबू

शेख जुर्दक रह. ने लिखा है कि मुअल्लिफ दलाइलुल खैरात की कब्र से खुशबू मुश्क व अम्बर की आती है।

और यह सब बरकत दरूद शरीफ की है। (फजाईले दरूद हिन्दी, सफा 123, किस्सा 7)

अल्लाह के रसूल की कब्र और किसी सहाबी के बारे में तो ऐसी कोई बात नहीं मिलती जो फजाइले आमाल के बुजुर्ग ने ऊपर लिखी है।

रसूल अल्लाह सल्ल. ने फरमाया : इल्म पढ़ने से हासिल होता है। (हदीस सही बुखारी)

फजाइल आमाल में इबादत के नये नये तरीके जो सरासर सुन्नत के खिलाफ है।

1. 12 दिन तक 1 वजू से नमाज पढ़ी (नमाज सफा 259)
2. 98 बरस तक नहीं लेटे - सदकात 429
3. 1 साल का ऐतकाफ - सदकात 429
4. सारी रात रूकू - सदकात 431
5. हर रात 1000 रकाअत पढ़ते - सदकात 431
6. 40 साल तक बिस्तर पर नहीं लेटे- सदकात 431
7. दिनरात में सोते हुए नहीं देखा - सदकात 432
8. 3 साल का चिल्ला - हज्ज किस्सा 4, सफा 162
9. एक सांस में 200 दफा ला इलाहा इल्ललाह - फजाइल जिक्र हिन्दी सफा 132, उर्दू सफा 83
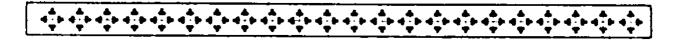
10. सारी रात सजदे में गुजारते - सदकात सफा 431
11. एक बुजुर्ग ने 24 हजार कुरआन खत्म किये सदकात सफा, 432
12. एक बुजुर्ग ने 50 बरस तक इशा और फजर एक वजू से पढ़ी - फजाइल नमाज सफा 261

अल्लाह तआला वही काम कबूल करते हैं जो सुन्नत से साबित हो।

फरमाने रसूल सल्ल. : हजरत अनस फरमाते हैं तीन सहाबी अजवाज मुतहरात रजि. (नबी सल्ल. की बीवियाँ उम्मत की मांये) के घरों में हाजिर हुए और नबी अकरम सल्ल. की इबादत के बारे में सवाल किया। जब इन्हें बताया गया तो उन्होंने आप सल्ल. की इबादत को कम समझा और आपस में कहा, नबी सल्ल. के मुकाबले में हमारा क्या मकाम है। उनकी तो अगली, पिछली सारी खतायें माफ कर दी गई है (लिहाजा हमें आपसे ज्यादा इबादत करनी चाहिए)। उनमें से एक ने कहा, मैं हमेशा सारी रात नमाज पढूँगा (आराम नहीं करूंगा)। दूसरे ने कहा मैं हमेशा रोजे रखूंगा और कभी नहीं छोड़ूंगा, तीसरे ने कहा मैं औरतों से अलग रहूंगा और कभी निकाह नहीं करूंगा। जब रसूल अल्लाह सल्ल. तशरीफ लाये तो

उनसे पूछा- क्या तुमने ऐसा और ऐसा कहा है? (उनके इकरार पर) आप सल्ल. ने इरशाद फरमायाः खबरदार अल्लाह की कसम तुम सबसे ज्यादा अल्लाह तआला से डरने वाला और तुम सबसे ज्यादा परहेजगार हूँ, लेकिन मैं रोजा रखता हूँ, छोड़ता भी हूँ और रात को कयाम करता हूँ (नमाज भी पढ़ता हूँ) और आराम भी करता हूँ औरतों से निकाह भी किये हैं (याद रखो) जिसने मेरी सुन्नत से मुंह मोड़ा, उसका मुझसे कोई ताल्लुक नहीं (हदीस सही बुखारी शरीफ)

आप हजरात ने फजाइल आमाल के हवाले से यह वाकयात किस्से कहानियाँ, झूटी हदीसे दीन में इबादत के नये नये तरीके, यह सब कुरआन व सुन्नत के सरासर खिलाफ हैं। आप ऐसी किताबों से बचें और जो किताब कुरआन व हदीस के हवालों से मुजय्यन हों, उन्हीं किताबों को पढ़ें।

फरमाने रसूल सल्ल. (दीन में) हर नई चीज बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही का ठिकाना आग है। (हदीस निसाई शरीफ)

दीन में हर नया काम सरासर गुमराही है

हजरत अरबाज विन सारिया रजि. कहते हैं कि रसूल अल्लाह सल्ल. ने फरमाया : दीन में नई चीजों से बचो। इसलिए कि हर नई बात गुमराही है। (हदीस इब्ने माजा सही)

बिदअती की मदद करने वाले पर अल्लाह की लानत है

हजरत अली रजि. कहते हैं कि रसूल अल्लाह सल्ल. ने फरमाया : अल्लाह तआला ने लानत की है, उस शख्स पर जो गैर अल्लाह के नाम पर जानवर काटे, जो जमीन की हदे बदले, जो अपने बाप पर लानत करे और जो बिदअती को पनाह दे। (हदीस सही मुस्लिम)

बिदअती की तौबा कबूल नहीं, जब तक बिदअत ना छोड़े

हजरत अनस बिन मालिक रजि. कहते हैं : रसूल अल्लाह सल्ल. ने फरमाया, अल्लाह तआला बिदअती की तौबा कबूल नहीं करता, जब तक कि वोह विदअत छोड़ ना दे। (हदीस तिबरानी हसन)
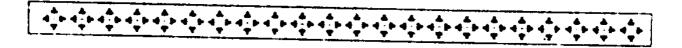
कयामत के दिन नबी सल्ल. बिदअतियों से शदीद इजहार नफरत फरमायेंगे : हजरत सहल रजि. कहते हैं कि रसूल अल्लाह सल्ल. ने फरमाया : मैं होज कोसर पर तुम्हारा पैश रोह होऊगा, जो वहां आयेगा, पानी पीयेगा और जिसने एक बार पी लिया, उसे कभी प्यास नहीं लगेगी, कुछ ऐसे लोग भी आयेंगे जिन्हें मैं पहचानूंगा (और समझूंगा कि यह मेरे उम्मती हैं।) और वोह भी मुझे पहचानेंगे कि मैं उनका रसूल हूँ। फिर उन्हें मुझ पर आने से रोक दिया जाएगा। मैं कहूंगा यह मेरे उम्मती हैं, लेकिन मुझे बताया जाएगा : ऐ मुहम्मद सल्ल. आप नहीं जानते, आपके बाद इन लोगों ने कैसी कैसी बिदअते निकाली। फिर मैं कहूंगा : दूरी हो दूरी हो, ऐसे लोगों के लिए जिन्होंने मेरे बाद दीन बदल डाला। (हदीस बुखारी व मुस्लिम शरीफ)

दुआ

मेरे अल्लाह अपने एक मामूली गुलाम से तूने यह काम करा दिया कि उसने तेरे बन्दों के सामने एक आईना (नमूना) रख दिया, जिसमें वह दोनों रास्ते अलग अलग देख ले और दोनों
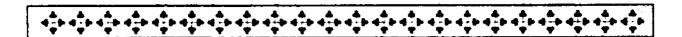
दरियाओं के बीच का पर्दा अपनी आंखों से देख ले। अब गुजारिश है इसे कबूल फरमां और इससे अपने बन्दों को नफा पहुंचा। आमीन! या रब्बल आ-लमीन!

अगर आपको यह वाक्यात देखने हैं तो इस्लामिक बुक सर्विस 1422 कुचा चालियान, दरियागंज, नई दिल्ली में देख लें। मैने यह किताब इसी के हवाले से लिखी है। दूसरी प्रेसों की किताब में सफा इधर-उधर हो सकता है, छपाई की वजह से आप ढूंढ लें।

फरमाने इलाही : ऐ मेरे परवरदीगार! तू मुझे और मेरे मां-बाप और जो भी ईमानदार होकर मेरे घर में आये और तमाम मौमिन मर्दो और सब ईमानदार औरतों को बख्श दे और काफिरों को सिवाय बर्बादी के और किसी बात में न बढ़ा। (सूरा नूह, पारा 29, आयत 28)

फरमाने इलाही : पाक है आपका रब जो बहुत बड़ी इज्जत वाला है। हर उस चीज से (जो काफिर) बयान करते हैं। पैगम्बरों पर सलाम है। और सब तरह की तारीफ अल्लाह के लिए है जो सारे जहां का रब है। (सूरा साफ्फात, पारा 23, आयत 180 से 182 तक)
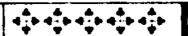
दीन-ए-इस्लाम मुकम्मल है

फरमाने इलाही : आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया है। तुम पर अपनी नैमत पूरी कर दी है और इस्लाम को तुम्हारे लिए बतौर दीन पसन्द किया है। (सूरा माईदाह, पारा6, आयत 3)

फरमाने रसूल सल्ल. : मैं तुम्हारे पास दो चीजें छोड़ चला हूँ, उनको जब तक पकड़े रखोगे, गुमराह ना होने पाओगे। एक अल्लाह की किताब (कुरआन मजीद) दूसरी उसके रसूल (सल्ल.) की सुन्नत।

(हदीस-सही हदीस मोत्ता इमाम मालिक उर्दू तर्जुमा सफा नं. 628)

बहिश्ती (जन्नती) जेवर

कुरआन व हदीस की अदालत में

लेखक : हकीमुल देवबन्द हनफी
हजरत मौलाना
अशरफ अली थानवी

बहिश्ती जेवर के मअसले जिनकी कुरआन व हदीस से कोई दलील नहीं है।

कुरआन व हदीस को छोड़ने का नतीजा।

उल्टा वुजू जाईज (सही) है।

सुन्नत यही है कि इसी तरह से वुजू करे, जिस तरह हमने ऊपर बयान किया है। और अगर कोई उल्टा वुजू कर ले कि पहले पांव धो डाले, फिर मस्ह करे, फिर दोनों हाथ धोये, फिर मुंह धो डाले या और किसी तरह उलट-पलट कर वुजू करे तो भी वुजू हो जाता है। लेकिन सुन्नत के मुवाफिक वुजू नहीं होता और गुनाह का खौफ (डर) है। (बहिश्ती जेवर, हिस्सा 1, सफा 57, मसला 4)
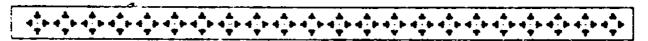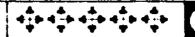
गन्दगी को पाक करने का अजीब तरीका

1. हाथ में कोई नजिस (गंदी) चीज लगी थी, उसको किसी ने जुबान से तीन बार चाट लिया, तो भी पाक हो जायेगा, मगर चाटना मना है। या छाती पर बच्चे की कै (उल्टी) का दूध लग गया, फिर बच्चे ने तीन बार चूस कर पी लिया, वह पाक हो गया। (बहिश्ती जेवर हिन्दी, हिस्सा 1, सफा 71, मसअला 26) (बहिश्ती जेवर उर्दू, हिस्सा 1, सफा 84, मसअला 26)

हमबिस्तरी का गलत तरीका

2. जब मर्द के पेशाब के मकाम (जगह) की सुपारी अन्दर चली जावे और छुप जावे तो भी गुस्ल (नहाना) वाजिब (जरूरी) हो जाता है, चाहे मनी (वीर्य) निकले या न निकले। मर्द की सुपारी आगे की राह गयी हो तब भी गुस्ल वाजिब है, चाहे कुछ भी न निकला हो। और अगर पीछे की राह गई हो तब भी गुस्ल वाजिब है। लेकिन पीछे की राह करना और कराना बडा गुनाह है। (बहिश्ती जेवर उर्दू, हिस्सा 1, सफा 78, मसअला नं. 3)

3. अगर मर्द ने पाखाने (लेटरिंग) की जगह अपना अंग कर दिया और सुपारी अन्दर चली गई, तब भी मर्द और औरत दोनों का वुजू जाता रहा। कजा व कफ्फारा दोनों वाजिब है। (बहिश्ती जेवर हिन्दी, हिस्सा 3, सफा 158, मसअला 19) (बहिश्ती जेवर उर्दू, हिस्सा 3, सफा 144, मसअला 19)

छोटी लड़की से हमबिस्तरी

4. छोटी लड़की से अगर किसी मर्द ने सोहबत (हमबिस्तरी) की जो अभी जवान नहीं हुई है तो इस पर गुस्ल वाजिब नहीं। लेकिन आदत डालने के लिए उससे गुस्ल कराना चाहिए। (बहिश्ती जेवर उर्दू, हिस्सा 1, सफा 78, मसअला नं. 5) (बहिश्ती जेवर हिन्दी, हिस्सा 1, सफा 62, मसअला 5)

रोजा तोड़ने का अजीब तरीका

5. कोई औरत गाफिल (बे-खबर) सो रही थी या बेहोश पड़ी थी, उससे किसी ने सोहबत की तो रोजा जाता रहा, सिर्फ कजा वाजिब है, कफ्फारा वाजिब नहीं और मर्द पर कफ्फारा भी वाजिब है। (बहिश्ती जेवर हिन्दी, हिस्सा 3, सफा 159, मसअला 28) (बहिश्ती

जेवर उर्दू, हिस्सा 3, सफा 144, मसअला 28)

औरत का इद्दत में बैठने का अजीब मसअला

6. गैर औरत को अपनी बीबी समझकर धोके से सोहबत कर ली, फिर मालूम हुआ कि यह बीबी न थी तो उस औरत को भी इद्दत बैठना होगा। (बहिश्ती जेवर हिन्दी, हिस्सा 4, सफा 269, मसअला 8) (बहिश्ती जेवर उर्दू, हिस्सा 4, सफा 220, मसअला 8)

रोजा खराब न होने का अजीब मसअला

7. मर्द अगर अपने खास हिस्से के सूराख में कोई चीज डाले तो वो चूंकि पेट तक नहीं पहुंचती, इसलिए रोजा खराब न होगा। (बहिश्ती जेवर हिन्दी, हिस्सा 11, सफा 842, मसअला 7) (बहिश्ती जेवर उर्दू, हिस्सा 11, सफा 710, मसअला 7)

ऐसा मसअला जो किसी इन्सान के दिमाग में भी नहीं आ सकता

8. किसी ने मुर्दा (मरी हुई) औरत से या ऐसी कम-सिन
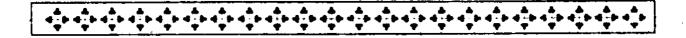
नाबालिक लड़की से, जिसके साथ जिमाअ (हमबिस्तरी) का चाव नहीं होता या किसी जानवर से जिमाअ किया, या किसी को लिपटाया या बोसा (चुम्मा) लिया या जलक (हाथ से हिलाकर मनी गिराना) किया और इन सब शक्लों में मनी निकल पड़ी तो रोजा खराब हो जायेगा और कफ्फारा वाजिब न होगा। (बहिश्ती जेवर हिन्दी, हिस्सा 11, सफा 842, मसअला 8) (बहिश्ती जेवर उर्दू, हिस्सा 11, सफा 710, मसअला 8)

रोजेदार औरत का मजाक

9. किसी रोजेदार औरत से जबरदस्ती या सोने की हालत में, जुनून की हालत में जिमाअ किया तो औरत का रोजा खराब हो जायेगा और औरत पर सिर्फ कजा जरूरी होगी और मर्द भी अगर रोजेदार हो तो उस कजा व कफ्फारा दोनों जरूरी है। (बहिश्ती जेवर हिन्दी, हिस्सा 11, सफा 842, मसअला 9) (बहिश्ती जेवर उर्दू, हिस्सा 11, सफा 710, मसअला 9)

औरतों पर इल्जाम

10. अगर कोई औरत किसी नाबालिग (जो अभी जवान नहीं हुआ) बच्चे से या पागल से जिमाअ कराये तब भी
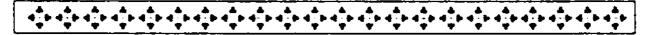
उस पर कजा और कफ्फारा दोनों जरूरी होंगे। (बहिश्ती जेवर हिन्दी, हिस्सा 11, सफा 842, मसअला 13) (बहिश्ती जेवर उर्दू, हिस्सा 11, सफा 710, मसअला 13)

पेशाब के छींटों का धोना जरूरी नहीं

11. अगर पेशाब के छींटें सूई की नोक के बराबर पड़ जाये कि देखने से दिखाई न दें, तो इसका कुछ हर्ज नहीं, धोना वाजिब नहीं है। (बहिश्ती जेवर हिन्दी, हिस्सा 2, सफा 69, मसअला 11,) (बहिश्ती जेवर, उर्दू, हिस्सा 2, सफा 83, मअसला 11)

जूती के लिए नमाज तोड़ना जाईज

12. नमाज में किसी ने जूती उठा ली और डर है कि अगर नमाज न तोड़ेगी तो लेकर कोई भाग जायेगा तो इसके लिए नियत तोड़ देना दुरूस्त (ठीक) है (बहिश्ती जेवर उर्दू, हिस्सा 2, सफा 101, मसअला 4) (बहिश्ती जेवर हिन्दी, हिस्सा 2, सफा 95, मसअला 4)

नमाज की कदर तीन-चार आने से भी कम

13. कोई नमाज में है और हांडी उबलने लगी, जिसकी लागत तीन-चार आने हैं तो नमाज तोड़कर उसको दुरुस्त कर देना जाईज है। (बहिश्ती जेवर उर्दू, हिस्सा 2, सफा 101, मसअला 5) (बहिश्ती जेवर हिन्दी, हिस्सा 2, सफा 95, मसअला 5)

कई जमाने से शौहर परदेश में और यहां बच्चा हो गया, फिर भी हलाल का

14. मियां परदेस में है और मुद्दत हो गई, बरसें गुजर गई, घर नहीं आया और यहाँ लड़का पैदा हो गया (और शौहर उसको अपना ही बताता है) तब भी वो (अज-रूए कानून शरई) हरामी नहीं, उसी शौहर का है। अलबत्ता अगर शौहर खबर पाकर इनकार करेगा तो लिआन का हुक्म होगा। (बहिश्ती जेवर हिन्दी, हिस्सा 4, सफा 278, मसअला 10) (बहिश्ती जेवर उर्दू, हिस्सा 4, सफा 227, मसअला 10)

बेहयाई की हद हो गई

15. किसी जरूरत से दाई ने पेशाब की जगह उंगली डाली या खुद उसने अपनी उंगली डाली, फिर सारी उंगली या थोड़ी सी उंगली निकालने के बाद, फिर कर

दी तो रोजा जाता रहा। लेकिन कफ्फारा वाजिब नहीं और अगर निकालने के बाद फिर नहीं की तो रोजा नहीं गया। हाँ! अगर पहले ही से पानी वगैरह किसी चीज में उंगली भीगी हुई हो तो पहली बार के करने में ही रोजा जाता रहेगा। (बहिश्ती जेवर हिन्दी, हिस्सा 3, सफा 159, मसअला 23) (बहिश्ती जेवर उर्दू, हिस्सा 3, सफा 144, मसअला 23)

हकीमुल उम्मत मुहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का इन बेहुदा मसअलों के बारे में फैसला

फरमाने इलाही : जो लोग यह चाहते हैं कि ईमान लाने वालों में बेहयाई फैले, उनके लिए दुनिया में भी भयानक अजाब है और आखिरत में भी और (उसके नताईज को) अल्लाह ही बेहतर जानता है। तुम नहीं जानते। (सूरा नूर, पारा 18, आयत 19)

फाहिशा (बेहयाई) : हर वो बात या काम जो इन्सान की शहवानी (सेक्स) की ख्वाहिश में तहरीक (बढ़ने) का सबब हो, जैसे जिन्सी बातें, नंगापन, फहश,

किताबें और फिल्में वगैरह।

जानी (बलात्कारी) औरत हो या मर्द, इनमें से हर एक को सौ कोड़े लगाओ। और अगर तुम अल्लाह और आखरत के दिन पर ईमान रखते हो तो अल्लाह के दीन के मामलों में इन दोनों (में से किसी) पर भी तरस न आना चाहिए और मुसलमानों में से एक गिरोह उनकी सजा के वक्त मौजूद होना चाहिए। (सूरा नूर, पारा 19, आयत 2)

यह सजा गैर शादीशुदा यानी कुंआरे मर्द या औरत के लिए है। इसका इशारा कुरआनी आयात से भी मिलता है और बेशुमार हदीसों से भी साबित है।

हजरत उबादा बिन सामित रजि. रिवायत करते हैं कि आप सल्ल. ने फरमाया, ''बदकार मर्द व औरत की मुस्तिकिल सजा मुकर्रर (तय) कर दी गई है। वो तुम सीख लो और वो यह है, कुंवारे (गैर शादीशुदा) मर्द और औरत के लिए सौ-सौ कौड़े और एक साल जिलावतनी (देशनिकाला), और शादी शुदा मर्द व औरत को सौ-सौ कौड़े और रज्म (चौराहे पर खड़ा करके पत्थरों से जान से मारना) के जरीये मार देना है। (हदीस सही मुस्लिम)
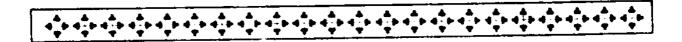
फरमाने इलाही : जिना (बलात्कार) के पास न जाओ, वो बहुत बुरा काम है और बड़ा ही बुरा रास्ता है। (सूरा ए मुहम्मद, पारा 26 आयत नं. 22, 23)

1. रसूलुल्लाह सल्ल. ने फरमाया जिसने जानबूझ कर झूट मेरी जानिब मनसूब किया, वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले। (हदीस बुखारी मुस्लिम)

2. हजरत सलमा रजि. से रिवायत है कि मैंने नबी अकरम सल्ल. को यह फरमाते सुना है कि जो शख्स मेरी तरफ ऐसी बात मनसूब करे, जो मैंने नहीं कही, वोह अपनी जगह जहन्नम में वना ले। (हदीस सही बुखारी)

3. जब तुम किसी को कौमे लूत वाला काम करते (लोण्डे बाजी यानी मर्द का मर्द से बदकारी करना) हुए देखो तो फाअल (करने वाला) और मफउल (कराने वाला) दोनों को कत्ल कर दो। (हदीस सुनन अबू दाउद, 4462)

4. आप स.अ.व. ने फरमाया, ''अल्लाह तआला उस मर्द को नजरे-रहमत से नहीं देखेगा जो किसी मर्द को या औरत को गैर फितरी (पीछे के) रास्ते से

आता है।'' (हदीस सुनन तिरमजी, 1160)

5. जब कोई बन्दा जिना में मशगूल होता है तो उसका ईमान निकल कर सर पर सायबान की शक्ल बन जाता है, जब रूक जाता है तो ईमान फिर वापस आ जाता है। (हदीस सुनन अबू दाउद, 4690)

6. अल्लाह तआला उस मर्द को नजरे-रहमत से नहीं देखेगा जो किसी मर्द को या औरत को गैर फितरी (पीछे के) रास्ते से आता है।'' (हदीस सुनन तिरमजी, 1160)

पेशाब के छींटों से बचने का सख्त हुक्म

7. हजरत इब्ने अब्बास रजि. रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह स.अ.व. दो कबरों के पास से गुजरे तो फरमाया, ''इन दोनों कबरों वालों को अजाब हो रहा है। और अजाब का कारण कोई बड़ी चीज नहीं, इन दोनों में से एक पेशाब से नहीं बचता था और दूसरा चुगलखोर था। (हदीस सही बुखारी, 218)

8. पानी पाक है (और इसमें दूसरी चीजों को पाक करने की ताकत है।) इसे कोई चीज नापाक नहीं करती। (हदीस अबू दाउद, 66)

कुरआन व हदीस की अदालत में

फजाइले आमाल और बहिश्ती जेवर

एक जायजा

मिलने का पता

मस्जिद अल हय्युल कय्यूम

हिदायत कॉलोनी, बाईपास, खण्डेला
जिला–सीकर (राज.)

कीमत 25 रूपये

जे.एन.कम्प्यूटराईज्ड प्रिन्टर्स, मो. 9352822680